p19 Aufgabe2 zum 07.01.2022

Bitte übersetzt in der rechten Spalte der gegebenen Reihe nach.

Anfang p19

|  |  |
| --- | --- |
| ταῦτα εἴρηται πάντα  |  |
| τῆς συμβουλῆς ἕνεκα  |  |
| τῶν Διωνείων φίλων καὶ συγγενῶν·  |  |
| συμβουλεύω δὲ δή τι πρὸς τούτοις  |  |
| τὴν αὐτὴν συμβουλὴν  |  |
| καὶ λόγον τὸν αὐτὸν λέγων  |  |
| ἤδη τρίτον τρίτοις ὑμῖν.  |  |
| μὴ δουλοῦσθαι Σικελίαν  |  |
| ὑπ᾽ ἀνθρώποις δεσπόταις,  |  |
| μηδὲ ἄλλην πόλιν,  |  |
| ὅ γ᾽ ἐμὸς λόγος,  |  |
| ἀλλ᾽ ὑπὸ νόμοις·  |  |
| οὔτε γὰρ τοῖς δουλουμένοις  |  |
| οὔτε τοῖς δουλωθεῖσιν ἄμεινον,  |  |
| [334δ] αὐτοῖς καὶ παισὶ  |  |
| παίδων τε καὶ ἐκγόνοις,  |  |
| ἀλλ᾽ ὀλέθριος πάντως ἡ πεῖρα,  |  |
| σμικρὰ δὲ καὶ ἀνελεύθερα ψυχῶν ἤθη  |  |
| τὰ τοιαῦτα ἁρπάζειν κέρδη φιλεῖ,  |  |
| οὐδὲν τῶν εἰς τὸν ἔπειτα  |  |
| καὶ εἰς τὸν παρόντα καιρὸν  |  |
| ἀγαθῶν καὶ δικαίων εἰδότα  |  |
| θείων τε καὶ ἀνθρωπίνων.  |  |
| ταῦτα πρῶτον μὲν Δίωνα  |  |
| ἐπεχείρησα ἐγὼ πείθειν,  |  |
| δεύτερον δὲ Διονύσιον,  |  |
| τρίτους δὲ ὑμᾶς νῦν.  |  |
| καὶ ἐμοὶ πείθεσθε  |  |
| Διὸς τρίτου σωτῆρος χάριν[[1]](#endnote-1),  |  |
| εἶτα εἰς Διονύσιον βλέψαντες καὶ Δίωνα,  |  |
| ὧν ὁ μὲν μὴ πειθόμενος  |  |
| ζῇ τὰ νῦν [334ε] οὐ καλῶς,  |  |
| ὁ δὲ πειθόμενος τέθνηκεν καλῶς·  |  |
| τὸ γὰρ τῶν καλλίστων ἐφιέμενον[[2]](#endnote-2)  |  |
| αὑτῷ τε καὶ πόλει[[3]](#endnote-3) πάσχειν  |  |
| ὅτι ἂν πάσχῃ πᾶν ὀρθὸν καὶ καλόν.  |  |
| οὔτε γὰρ πέφυκεν  |  |
| ἀθάνατος ἡμῶν οὐδείς,  |  |
| οὔτ᾽ εἴ τῳ συμβαίη,  |  |
| γένοιτο ἂν εὐδαίμων,  |  |
| ὡς δοκεῖ τοῖς πολλοῖς·  |  |
| κακὸν γὰρ καὶ ἀγαθὸν οὐδὲν  |  |
| λόγου ἄξιόν [335α] ἐστιν τοῖς ἀψύχοις,  |  |
| ἀλλ᾽ ἢ μετὰ σώματος οὔσῃ ψυχῇ  |  |
| τοῦτο συμβήσεται ἑκάστῃ  |  |
| ἢ κεχωρισμένῃ.  |  |
| πείθεσθαι δὲ ὄντως ἀεὶ χρὴ  |  |
| τοῖς παλαιοῖς τε καὶ ἱεροῖς λόγοις,  |  |
| οἳ δὴ μηνύουσιν ἡμῖν  |  |
| ἀθάνατον ψυχὴν εἶναι  |  |
| δικαστάς τε ἴσχειν  |  |
| καὶ τίνειν τὰς μεγίστας τιμωρίας,  |  |
| ὅταν τις ἀπαλλαχθῇ τοῦ σώματος·  |  |
| διὸ καὶ τὰ μεγάλα ἁμαρτήματα καὶ ἀδικήματα[[4]](#endnote-4)  |  |
| σμικρότερον εἶναι χρὴ νομίζειν κακὸν  |  |
| πάσχειν ἢ δρᾶσαι,  |  |
| ὧν ὁ φιλοχρήματος [335β]  |  |
| πένης τε ἀνὴρ τὴν ψυχὴν[[5]](#endnote-5)  |  |
| οὔτε ἀκούει, ἐάν τε ἀκούσῃ,  |  |
| καταγελῶν, ὡς οἴεται,  |  |
| πανταχόθεν ἀναιδῶς ἁρπάζει πᾶν  |  |
| ὅτιπερ ἂν οἴηται,  |  |
| καθάπερ θηρίον, φαγεῖν ἢ πιεῖν  |  |
| ἢ περὶ τὴν ἀνδραποδώδη καὶ ἀχάριστον,  |  |
| ἀφροδίσιον λεγομένην οὐκ ὀρθῶς,  |  |
| ἡδονὴν ποριεῖν αὑτῷ τοὐμπίμπλασθαι,  |  |
| τυφλὸς ὢν καὶ οὐχ ὁρῶν,  |  |
| οἷς συνέπεται τῶν ἁρπαγμάτων ἀνοσιουργία,  |  |
| κακὸν ἡλίκον ἀεὶ  |  |
| μετ᾽ ἀδικήματος ἑκάστου,  |  |
| ἣν ἀναγκαῖον[[6]](#endnote-6) τῷ ἀδικήσαντι συνεφέλκειν  |  |
| ἐπί τε γῇ στρεφομένῳ  |  |
| καὶ ὑπὸ γῆς [335ξ] νοστήσαντι[[7]](#endnote-7) πορείαν  |  |
| ἄτιμόν τε καὶ ἀθλίαν πάντως πανταχῇ. |  |

1. Διὸς τρίτου σωτῆρος χάριν Wortspiel mit der Redewendung τὸ τρίτον <χεῦμα> τῷ σωτῆρι "den dritten <Opferguss> dem Retter <Zeus>", also "dem Retter Zeus als dem dritten (mit dem dritten Opferguss) zuliebe [↑](#endnote-ref-1)
2. ἐφιέμενον ist Subjektsakkusativ zum substantivierten Infinitiv πάσχειν [↑](#endnote-ref-2)
3. Die Dative sind Ergänzungen zu τῶν καλλίστων [↑](#endnote-ref-3)
4. Akk.Objekte zu πάσχειν ἢ δρᾶσαι [↑](#endnote-ref-4)
5. τὴν ψυχήν adverbialer Akkusativ zu πένης [↑](#endnote-ref-5)
6. ἀναγκαῖον erg. ἐστίν [↑](#endnote-ref-6)
7. νοστήσαντι πορείαν ἄτιμον im Phaidon beschreibt ein Mythos die ständigen Versuche der Seele des Ungerechten, Verzeihung zu bekommen. [↑](#endnote-ref-7)